International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाणभट्ट कृत हर्षचरितम एक ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन

विनोद कुमार
शोधछात्र इतिहास
जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

वैदिक काल के बाद पुराणकालीन गठों का मनोहर रूप हमे विष्णु–पुराण तथा श्रीमद्भागवत् में मिलता है। आगे चलकर दार्शनिक विचारकों ने भी अपने विचारों को सरलता से वोधगम्य कराने के लिए गद्ध का सहारा लिया। उन लोगों ने दर्शन के गूढ एवं दुरूह तथ्यों का विवेचन गद्ध में ही किया है। इनमें पतंजली, भवरस्वामी, भंकराचार्य तथा जयन्त भट्ट का नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। महर्षि पतंलजि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी के सूत्रों की व्याख्या के रूप में ही महाभास्य का निर्माण किया है। समस्त भास्य गद्ध मे ही है। इसके अतिरिक्त भवर स्वामी ने कर्म–भीमांसा के सूत्रों पर जो अपना भास्य लिखा है, वह भी गद्ध में ही उपनिवह है। भंकराचार्य ने सभी उपनिषदों, ब्रहासूत्रों और गीता सदृश दार्शनिक ग्रन्थों का अबाध रूप से अपने प्रवाहपूर्ण गद्ध में भास्य लिखकर अदैतवाद के सिद्धान्तों की स्थापना की है। जयन्त भट्ट न्याय–शास्त्र के पण्डित है। उन्होने न्यायमंजरी में अपनी रोचक गद्धशैली का परिचय दिया है। यद्यपि न्याय–शास्त्र दुरूह एवं स्वभावत कठिन माना जाता है। फिर भी उन्होने उसे वोधगम्य बना दिया है।

इन दार्शनिक आचार्यो के पश्चात् संस्कृत–साहित्य का गद्ध अत्यधिक कृत्रिम एवं पूर्णतः अलंकृत शैली में विकसित हुआ, जिसका एक रूप वाचस्पति मिश्र, श्री हर्ष और चित्सुश्वाचार्य के प्रबन्धो में, दुसरा रूप नव्यन्याय के प्रवर्त गंगेश उपाध्याय और

उनकी भिष्य–परम्परा द्वारा विरचित न्याय–पद्धति के शास्त्रपरक ग्रन्थों में मिलता है। विक्रम संवत के प्रारंभ काल में भी हमे गद्ध का नमूना शिलालेखों में मिलता है, जिससे यह पूर्णतया निश्चित हो जाता है कि उसम तक गद्धकाव्य पूर्णतया विकसित हो चुका था, उसमें काव्य–गुण यथा स्फुट, लघु, कान्त, मधुर उदार आदि का उल्लेख मिलता है। रूद्रदामन का शिलालेख जिसका समय विद्वानो ने 150 ई0 माना है गद्धकाव्य के उपर्युक्त महनीय गुणों को प्रख्यापित करने वाला तथा विकसित गद्धकाव्य की सूचना देने वाला महत्वपूर्ण प्रमाण है। इसमें सुदर्शन नाम के तालाब के टुटने तथा रूद्रदामन द्वारा उसकी मरम्मत किये जाने की घटना का उल्लेख है। समासपूर्ण पदावली तथा अलंकृत गद्धशैली का परिचय प्रस्तुत शिलालेख द्वारा मिल जाता है। इसके अतिरिक्त समुद्रगुप्त का प्रायग–स्तम्भलेख भी इसी प्रकार ओजगुणविशिष्ट समास वहुल एवं अलंकृत गद्धकाव्य का निदर्शन करने वाला है। इस शिलालेखों में वाण की तरह गद्धशैली पायी जाती है। इस प्रकार मध्ययुगीन गद्धकाव्यकारों के पूर्व भी गद्ध विकसित हो रहा था इसी कारण आगे चलकर मध्युग सुबन्धु दण्डी एवं वाण की समय तक यह गद्धशैली अपनी उच्चतम विकसित अवस्था तक पहुँच सकी।

अलंकृत गद्ध लिखने की परम्परा का प्रारंभ संस्कृत साहित्य में गद्धकाव्य के सर्वप्रथम लेखक सुबन्धु से ही हुआ वाण ने इनकी प्रशंसा की है। अत एव इनका आविर्भाव वाण के पूर्व ही माना जाता है। इनके काल निर्णय के विषय में विद्वानों में एकमत्य नही है। कीथ महोदय ने सुबन्धु के पहले दण्डी का समय निर्धारित किया है। उसकी पृष्टि में प्रमाण उपस्थित करते हुए उन्होने कहा है कि उपलब्ध प्रमाणो के आधार पर दण्डी का अलंकार ग्रन्थ काव्यदर्भ भामह (400ई0) से पूर्व सिद्ध होता है। दश कुमार चरित में जिस भुगोल का संकेत मिलता है वह

हर्षवर्द्धन के शासन के पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डालता है। दूसरी बात यह है कि दण्डी गद्ध रचना सुबन्धु एवं वाण की अपेक्षा सरल है तथा दण्डी सुबन्धु की परवर्ती है। इसमें जो प्रमाण उपलब्ध है वे कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है।

अधिकतर विद्वान वाण के हर्षचरितम में वासवदता का जो संकेत मिलता है उसके आधार पर सुबन्धु को वाण से पूर्ववर्ती मानते है। दण्डी का वाण से पूर्ववर्ती होना भी सिह है इस विषय में यह कहा जाता है कि दण्डी विरचित दश कुमार चरित में जो भौगोलिक चित्रण तथा राजनितिक वातावरण प्रस्तुत किया गया है वह महाराज हर्षवर्द्धन के राज्यकाल के पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डालता है अतएव दण्डी छठी शताब्दी के आस–पास के ही हो सकते है। राजशेखर ने अपने राघवपाण्डवीय (1200ई0) में सुबन्धु को पहले और वाण को वाद में रखा है उनकी यह गणना कालकम पर ही अवलम्बित है। गउड़बहो में सुबन्धु का स्पष्ट उल्लेख इस बात को सूचित करता है कि वाण की अपेक्षा सुबन्धु तब तक अधिक प्रसिद्ध हो चुके थे। प्रो0 काणे ने हर्षचरितम में सुबन्धु की वासवदता के संकेत को नहीं मानने का पीटरसन का जो मत है उसका खण्डन किया है और सुबन्धु की वासवदता को ही हर्षचरितम का लक्ष्य मानकर सुबन्धु को वाण से पूर्ववर्ती स्वीकार किया है। इस प्रकार उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात पूर्णतया सिद्ध हो जाती है कि वाण की अपेक्षा सुबन्धु और दण्डी पहले हुए थे। इस प्रकार सुबन्धु के बाद दण्डी तथा उनके बाद वाण हुए। इन लोगो को समय छठी शताब्दी के प्रारंभ से लेकर सातवीं शताब्दी के उतराई तक माना जाता है। सुबन्धु के काल की अन्तिम सीमा छठी शताब्दी का मध्य है, जिनके काव्य की छाया वाण के काव्यों पर स्पष्ट रूप से पड़ती है। दण्डी का समय छठी शताब्दी का उतराई तथा सातवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। इन दोनो ग0काव्यकारों के बाद वाण का दुर्भाव

हुआ। हर्षवर्द्धान राज्य काल में होने से इनका समय सातवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध तथा थोड़ा सा उतरार्द्ध में माना जाता है। इस प्रकार तीनो गद्ध काव्यकारों की संगति बैठ जाती है। इनमें प्रथम सुबन्धु ने संस्कृत साहित्य को एक ही कृति अर्पित की ओर वह है वासवदता। प्रस्तुत ग्रन्थ की कथावस्तु का प्रणयन कवि ने प्राचीन ख्यातवृत उदयन एवं वासवदता की प्रणय–कथा से न लेकर अपने मस्तिस्क से किया है। उन्होने उसे एक नवीन रूप देने का भी प्रयास किया है यह कवि की मौलिक कृति है कवि ने कथा के अनुकूल ही अपनी उर्वरा शक्ति से कल्पित कथावस्तु को उपन्यस्त किया है। इसका कथानक बहुत ही स्वल्प कलेवर में सहृदय पाठकों के सम्मुख उपस्थित होता है। कथानक इस प्रकार है राजा चिन्तामणि का पुत्र कन्दर्पकेतु एक सुन्दर एवं सुशील राजकुमार है। एक दिन रात्रि में वह स्वप्न में अत्यन्त सुन्दरी राज कुमारी को देखता है। वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर प्रातः काल होते ही अपने परम प्रिय मित्र मकरन्द के साथ उसी सुन्दरी की खोज मे निकल पड़ता है उसी धुन में वह विन्ध्यपर्वत पर पहुँच कर एक शुकदम्पति के संलाप को सुनकर उस राजकुमारी का पता पा जाता है। पाटलिपुत्र में उसका मिलन राजकुमारी से हो जाता है। वहा पर राज कुमार को इस बात का पता चलता है कि उसके पिता राजा श्रृंगारशेखर वासवदता का विवाह विधाधरो के राजा पुष्पकेतु से करना चाहते हैं इस वाधा के कारण दोनो नायक – नायिका आपस में सलाह करके एक जादू के घोड़े पर बैठकर विन्ध्याटनी से भाग जाते हैं राज कुमार कन्दर्पकेतु को सोते हुए छोड़कर वासवदता अरण्य में घुमने के लिए चली जाती है वहा उसकी भेट किरातो से हो जाती है जिससे वह उनसे भयभीत होकर एक ऋषि के आश्रम में धुस जाती है। धृष्टता से रूस्ट होकर ऋषि भाप दे डालते है और वह भिला वन जाती है। जब राजकुमार की निद्रा भंग होती है तो

वह वासवदता को न देखकर बहुत ही दुखी होता है तथा अत्महत्या तक करने को उघत हो जाता है किन्तु उसी समय आकाशवाणी होती है जिसे सुनकर प्रिया से भेट होने की आशा प्राप्त कर राजकुमार थोड़ा आश्वस्त होता है अन्त में वह जंगल में खोजते–खोजते एक शिलापुत्रिका को देखता है। ज्योहि उसका स्पर्श होता है त्योही प्रियतमा वासवदता के रूप में बदल जाती है दोनो का पुर्नमिलन होता है और दोनों अपनी राजधानी में लौट कर सुख से अपने दाम्पत्य–जीवन का आनन्द उठाते है संक्षेप में वासवदता की यही कथा है।

वाण की गध–पद्धति का अनुकरण करके कई अन्य कवियों ने भी गध में रचनाए की हर्षचरितम आख्यांयिक है। इसमें ऐतिहासिक कथा वस्तु की योजना की गयी है महाराज हर्षवर्दृन इतिहास प्रसिद्ध सम्राट है। सम्पूर्ण कथांसो को उच्छवासो में विभक्त किया गया है। हर्षचरितम के प्रारंभ में कवि ने अपने वंश का वर्णन किया है। स्थान–स्थान पर आर्या प्रभूति छन्दो का भी प्रयोग किया है। हर्षचरितम का वक्ता स्वयं कवि है। इसमें वीररस प्रधान होने से संग्राम का वर्णन तो मिलता है किन्तु विप्रलम्भ तथा सुर्योदय आदि का वर्णन नही किया गया है। उच्छवास के आरम्भ में दूसरी कथा के व्यास से भावी कथा की सूचना भी दी गयी है इस प्रकार हर्षचरितम शुद्ध आख्यायिका की श्रेणी में आता है।

महाकवि वाणभट् संस्कृत वाड मय में गधकाव्य के महनीय अर्चाय है। गध–भैली के प्रवीण रचयिता एंव उसकी परिस्कृत परम्परा के जन्मदाता भी है महाकवि वाणभट् के जीवन तथा काल आदि के विषय में अत्याधिक विवाद नही है उन्होंने हर्षचरितम में अपने जीवन तथा वंशपरम्परा आदि के विषय में संकेत किया है।

संदर्भ सूची :–

1. .....
2. वाणभट् की आत्मकथा – डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. वाणभट् – डॉ0 रमेश चन्द्र शाह
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामविला चौधरी
5. वाणभट् – ओझा
6. भौखिरी वंश अध्ययन – पद्मगुप्त परिमल